# युग परिवर्तन इस्लामी दृष्टिकोण

स्वर्गीय पं श्रीराम आचार्य

की जन्म शताब्दी के अवसर पर

विशेष प्रस्तुति

सैय्यद अब्दुल्लाह तारिक़

# क्या हर तथाकथित मुसलमान की मुक्ति होगी?

पवित्र क़ुरआन की एक छोटी सी सूरः न. 103 का अनुवाद देखें

“ज़माना साक्षी है कि वास्तव में मानव घाटे में है सिवाय उन लोगों के [1]जो ईमान (आस्था) लाए [2]और उन्होंने सद्कर्म किये [3]और (दूसरों को भी) सत्य (सन्मार्ग) की ताकीद की और [4]धैर्यपूर्वक अडिग रहने की ताकीद की।”

जिसे परमेश्वर ने घाटे में बताया उसकी मुक्ति कैसे संभव है? घाटे की स्थिति से उबरने और सफलता की ओर अग्रसर होने की उपरोक्त आयत में चार शर्तें बताई गई हैं।

**ईमानः**

ईमान या आस्था सरल शब्दों में ‘मानने’ अर्थात हृदय से स्वीकार करने या पूर्ण विश्वास रखने को कहते हैं। मानने की न कोई भाषा होती है और न वह नज़र आने वाली वस्तु है। किसी ने कुछ माना या स्वीकार किया या नहीं, यह कर्म से विदित होता है। यदि कोई अन्दर आकर यह सूचना दे कि बाहर गोली चल रही है तो इस सूचना पर विश्वास करने वाले पीछे की खिड़की से कूद कर जाएंगे चाहे वह मार्ग कठिन और झाड़ झंकाड़ वाला हो। जिस को इस सूचना पर पूर्ण विश्वास नहीं होगा, वही मुख्य द्वार से जाने का साहस करेगा और यदि सूचना किसी सच्चे की दी हुई थी तो नुक़सान उठाएगा। इसी लिये स्वयं को ईमान वाला, आस्था रखने वाला या मानने वाला मात्र घोषित करदेना पर्याप्त नहीं है, कर्म से इस घोषणा को प्रमाणित करना भी अनिवार्य है। पवित्र क़ुरआन ने किसी भी आयत में नजात (मुक्ति) के लिये मात्र ईमान की बात नहीं कही अपितु ईमान के साथ सदा सद्कर्मों की शर्त रखी है।

**सद्कर्मः**

पवित्र क़ुरआन ने जिन सद्कर्मों का आदेश दिया उन में से कुछ का उल्लेख निम्न है।

- (वही ईमान वाले सफल होंग) जो अपनी अमानतों (धरोहरों) और अपनी प्रतिज्ञाओं की रखवाली करते हैं। (23:8)

- निःसंदेह अल्लाह (सब के साथ) न्याय करने और परोपकार करने और निकटवर्तियों (नातेदारों और पड़ोसियों) को (उनके अधिकार) देने का आदेश देता है और अशलीलता और दुष्कर्मों और विद्रोह से रोकता है... (16:90)

- हे मानने वालो, कोई वर्ग किसी वर्ग का उपहास न करे... और न स्त्रियां स्त्रियों की हँसी उड़ाएं... परस्पर व्यंग मत करो और किसी की बुरी उपाधि मत रखो... और जो इन (कर्मों को) पराइश्चित कर पलटे नहीं, सो ऐसे लोग अत्याचारी होंगे। हे ईमान वालो, दूसरों के विषय में अधिकतर बुरे अनुमान लगाने से बचो क्योंकि कुछ अनुमान पाप बन जाते हैं। दूसरों की टोह में न रहो और किसी की पीठ पीछे बुराई न करो... (49:11-12)

- ...अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि उन में से कोई एक या दोनों तुम्हारे जीवन काल में वृद्धावस्था को पहुँचें तो उन्हें किसी बात पर 'उँह' भी न कहना और न उन्हें झिड़कना और उन से सदा विनम्रता से बात करना और उनके आगे दयालुता से नम्रता की भुजाएं बिछाए रखो और उनके लिये प्रार्थना करते रहा करो कि हे स्वामी, जिस प्रकार इन्होंने बाल्यावस्था में मुझे पाला है, तू भी इन पर

दया कर। ... नातेदारों और बेबसों ओर यात्रियों को (अपने धन में से) उनके अधिकार दो और किसी रूप में भी फ़ुज़ूल ख़र्ची (अपव्यय) न करो। फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वाले निश्चय ही शैतान के भाई होते हैं ... निर्धनता के भय से अपनी संतान की हत्या न करो। हम उन्हें भी आजीविका प्रदान करेंगे और तुम्हें भी। निःसंदेह उनकी हत्या बहुत बड़ा अपराध है। ... व्यभिचार के निकट भी न जाओ... उस नीति के अतिरिक्त जो अनाथ के पक्ष में उत्तम हो, किसी अन्य ढंग से अनाथ के धन के पास न फटको, यहां तक कि वह अपनी युवावस्था को पहुँच जाए... और तुम नाप कर दो तो नाप पूरी दो। और धरती पर अकड़ कर मत चलो, न तो तुम धरती को फाड़ सकते हो और न लम्बे होकर पहाड़ को पहुँच सकते हो। ... (17:23-24, 26, 27, 32, 34, 35, 37)

- ...बुराई का उत्तर भलाई से दोगे तो तुम्हारी किसी से शत्रुता भी होगी तो वह तुम्हारा घनिष्ठ मित्र बन जाएगा। परन्तु इसका सामर्थ्य केवल उन्हें प्राप्त होता है जो बड़े धैर्यवान होते हैं और बड़े भाग्यशाली होते हैं। (41:34-35)
- परोपकार और ईश्वर की अवज्ञा से बचने के कामों में प्रत्येक का सहयोग करो और पाप व सीमा-उल्लंघन में किसी को सहयोग न दो ... (5:2)
- रहमान के सच्चे भक्त वे हैं जो पृथ्वी पर नम्रतापूर्वक चलते हैं और जब अज्ञानी उन से उलझते हैं तो वे 'शान्ति' कहते हुए गुज़र जाते हैं।
- शैतान तो यह चाहता है कि शराब और जुए के द्वारा तुम्हारे बीच शत्रुता और द्वेष पैदा करदे और तुम्हें अल्लाह के स्मरण और नमाज़ से रोक दे... (5:91)

- अल्लाह के सिवा जिनका यह आह्वान करते हैं, उनके प्रति अपशब्द का प्रयोग न करो....
- उनके धन में मांगने वालों का और धनहीन का भी अधिकार है।

## सत्य (सद्मार्ग) की ताकीदः

कुरआन एक अच्छे समाज का निर्माण चाहता है और इसके लिये केवल स्वयं अच्छा बन जाना पर्याप्त नहीं है अपितु सब की भलाई और नजात (मुक्ति) की चिन्ता आवश्यक है। वह इन्सान हो ही नहीं सकता जो किसी का घर जलता देखे या किसी को आत्म हत्या करते देखे और निश्चिन्त वहाँ से गुज़र जाए। कुरआन ने बहुत सी आयतों में दूसरों को भलाई की ताकीद और बुराई से रोकने का आदेश दिया है। इस कर्तव्य के पालन के बिना आस्था और सद्कर्मों के बाद भी इन्सान को घ ाटे की चेतावनी दी गई है।

## धैर्य और अडिग रहने की ताकीदः

ईमान और सद्कर्मों पर कोई टिक ही नहीं सकता जब तक धैर्यवान न हो परन्तु स्वयं इस गुण का धारण करना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि सभी को धैर्यवान बनाने का प्रयास भी ज़रूरी है ताकि सभी सद्मार्ग पर अडिग रह सकें और एक स्वस्थ समाज की स्थापना हो सके।

## अग्रदूतः

सद्कर्मी अच्छे होते हैं परन्तु समाज का निर्माण करने वाले, दूसरों को सद्कर्मों और धैर्य की प्रेरणा देने वाले, और इस के लिये प्रेमपूर्वक आग्रह करने वाले, अग्रदूत होते हैं। हज़रत मुहम्मद स. न केवल अग्रदूत थे बल्कि उन्होंने एक ऐसे वर्ग की स्थापना भी की जो शेष संसार की अगुवाई करे। जब पूर्व ईश्वरीय ग्रन्थों के धारक न केवल अगुवा न रहे बल्कि मूल ईश्वरीय ग्रन्थों से स्वयं भी कट गए तो उन पर अवतरित ईशवाणी पवित्र कुरआन ने अपने मानने वालों से कहा :

*"(अब) तुम सर्वोत्त्म पन्थ हो जिसे मानव जाति के हित के लिये लाया गया है तुम भलाई का उपदेश देते हो, बुराई से रोकते हो और एक ईश्वर में पूरी आस्था रखते हो। यदि पूर्व ग्रन्थों वाले भी ईमान लाते तो उन्हीं के लिये अच्छा होता। उन में ईमान वाले भी हैं किन्तु उनमें अधिकतर अवज्ञाकारी ही हैं।" (3:110)*

कुरआन पर ईमान लाने वालों ने कई शताब्दियों तक मानव जाति की अगुवाई की परन्तु फिर वे भी उसी मार्ग पर चल पड़े जिस पर पूर्व ईश्वरीय ग्रन्थों वाले निकल गए थे। मूल ग्रन्थ को व्यवहारिक जीवन में त्याग कर और कुरआन की शिक्षाएं भुला कर वे उपसमुदायों में विभाजित होगए तथा अपने-अपने उपसमुदायों के गुरुओं की परंपराओं को धर्म समझने लगे। जो स्वयं ईश्वरीय विधान से कट जाए वह अगुवाई क्या करेगा?

## अवकाश, निष्कासन एवं अन्य समुदाय को विश्व नरेश पद पर लाने की चेतावनीः

मुसलमान मगन हैं कि वे विश्व नरेश पद पर आसीन हैं परन्तु क़ुरआन बता चुका था कि यह किसी का जन्म अधिकार नहीं है बल्कि जिस में इस पद के योग्य गुण होंगे वही इसका उत्तराधिकारी होगा।

*"यदि तुम अपने उत्तरआयित्व को निभाने के लिये नहीं निकलोगे तो अल्लाह तुम्हें दुखद यातना देगा और तुम्हारे स्थान पर दूसरे वर्ग को ले आएगा और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे। अल्लाह हर बात का सामर्थ्य रखता है।" (9:39)*

*"...और अगर तुम अपनी ज़िम्मेदारियों से विमुख हुए तो वह तुम्हारे स्थान पर बदल एक दूसरे वर्ग को ले आएगा, फिर वे तुम जैसे नहीं होंगे।" (47:38)*

क़ुरआन से विदित होता है कि ईश्वर की ओर से ग़लतियों के सुधार का अवकाश भी दिया जाता है। सामान्यतः पृथ्वी पर जो व्यवस्था अवतरित होती है, वह एक हज़ार वर्ष के लिये होती है परन्तु इस में कभी कभी और अवकाश भी दिया जाता है।

*"वही है जो आकाश से धरती की ओर योजनाओं की व्यवस्था करता है, फिर वह योजना उसकी ओर वापिस लौटती है — एक ऐसे दिन में जिस की लम्बाई तुम्हारी गणना में एक हज़ार वर्ष है।" (32:5)*

ईशदूत हज़रत मुहम्मद स. के पंथ को 500 वर्ष अवकाश दिये जाने की सूचना स्वयं ईशदूत स. ने दी थी।

*"ह. साद बिन वक़ास ने बताया कि ईशदूत स. ने फ़रमाया कि निश्चय ही मुझे आशा है कि मेरी उम्मत (पंथ) अपने स्वामी की दृष्टि में इतनी हीन तो नहीं होगी कि उसका स्वामी उसे आधे दिन का अवकाश भी न दे। ह. साद से पूछा गया कि आधा दिन कितना होता है? उन्होंने उत्तर दिया कि 500 वर्ष।"*

उपरोक्त क़ुरआन की आयत और हदीस (ईशदूत मुहम्मद स. के कथन) से यह स्पष्ट है कि वर्तमान उम्मते मुहम्मदी को अपने मार्गदर्शक पद या विश्व की अगुवाई करने के पद या इमामते आलम या सर्वोत्म पन्थ या विश्व नरेश पद पर आसीन होने का सम्मान 1500 वर्षों क लिये प्रदान किया गया था। उसके बाद इस पद के अधिकारी जिन को बनाया जाना था वे एक बार भटक चुके हैं परन्तु अब संमार्ग पाने और पुनः ज़िम्मेदारी उठाने के बाद विमुख नहीं होंगे। (कु. 9:39 व 47:38)

## युग परिवर्तन का समयः

ज़ाहिर है कि पवित्र परमेश्वर के एक अन्य समुदाय को विश्व नरेश पद प्रदान करने के साथ ही युग परिवर्तन का शुभारंभ हो जाएगा। फिर वह वर्ग अपने उत्तरदायित्व का पालन करेगा और संपूर्ण विश्व में क्रान्ति की अगुवाई करेगा।

क़ुरआन और हदीस की दी हुई सूचनाओं के अनुसार युग परिवर्तन के उद्भव का समय ईशदूत ह. मुहम्मद स. के 1500 वर्ष बाद है। कुछ अन्य आयतों से (जिन्हें यहाँ उद्धरित नहीं किया जा रहा है) यह संकेत मिलते हैं कि यह समय इस से न एक क्षण पूर्व है और न बाद में।

किन्तु एक समस्या अभी शेष है। ईशदूत ह. मुहम्मद स. से संबंधित चार सीमाचिह्न हैं। [1]उनका जन्म वर्ष, [2]उन पर ईश-वाणी के अवतरण का प्रारम्भ, [3]उनकी मदीना हिजरत (देशान्तर गमन) और [4]उनका निधन। इन में से किस घटना से 1500 वर्ष की उलटी गिनती गिनी जाए? मदीना हिजरत की घटना से वर्तमान हिज्री वर्ष गिनने की परंपरा द्वितीय ख़लीफ़ा (ईशदूत के उत्तराधिकारी) ने ईश दूत स. के निधन के लगभग 5 वर्ष पश्चात अपने विवेक से शुरू की थी। इस तिथि का महत्व शासन संबंधी अधिक है और ईश-व्यवस्था स्थापना संबंधी कम। क़ुरआन व हदीस की सूचनाएं क्योंकि ईशदूत सं के सांसारिक जीवन काल में प्राप्त हुईं अतः उनके निधन से गणना भी तर्कसंगत नहीं है। शेष दो सीमा चिह्न महत्वपूर्ण हैं। इन दोनों में पहली सीमा उनके जन्म से शुरू हो रही है। पहले इसका आकलन करते हैं।

वर्तमान हिज्री वर्ष सन् 1432 है। मदीना हिजरत को इस लेख के लिखने तक 1431 वर्ष 5 महीने बीते हैं। ईशदूत का जन्म हिजरत से 53 वर्ष पूर्व हुआ था अर्थात ईशदूत स. के जन्म को अब तक 1431+ 53 = 1484 वर्ष और कुछ महीने बीत चुके हैं और 1500 वर्ष पूरे होने में अभी लगभग 15 हिज्री वर्षों से कुछ महीने ऊपर समय शेष है। हिज्री वर्ष में 355 दिन होते हैं। वर्तमान में प्रचलित ग्रीगोरियन कैलेन्डर में परिवर्तित करने पर इस अवधि में 150 दिन कम होजाऐंगे। इस प्रकार अन्तिम गणना यह है कि **सतयुग के प्रारंभ में वर्तमान (मई २०११) से मात्र १५ वर्ष का समय शेष है।**

दूसरी समय सीमा इसके 40 वर्ष बाद है क्योंकि उन पर ईशवाणी का अवतरण जन्म के 40 वर्ष बाद शुरू हुआ था। वहाँ से यदि

1500 वर्ष की गणना की जाए तो अभी 15 + 40 = 55 साल बाक़ी हैं।

15 वर्ष या 55 वर्ष? इन में से कौन सी अवधि को सही मानें? हमारी अभिलाषा तो यही है कि 15 वाला अनुमान सही हो। कलियुग को बहुत झेल चुके। ईश्वर का विधान हमारी अभिलाषाओं से बंधा हुआ नहीं है परन्तु एक और तथ्य 15 वर्ष के पक्ष में जाता है और वह प्रमाण अति विश्वसनीय़ है। वह विश्वसनीय साक्ष्य हैं स्वर्गीय गुरुदेव पं श्रीराम शर्मा आचार्य। स्व. आचार्य ने अपने ज्ञान एवं सनातनी साक्ष्यों के आधार पर गणना प्रस्तुत करते हुए फ़रमाया था कि "युग परिवर्तन का अनुमानित समय सन् 2000 के कुछ बाद तक है"। इस में कोई दो मत नहीं होने चाहिये के स्व. आचार्य के स्तर का कोई सनातन धर्मी विद्वान व ज्ञानी निकट अतीत में नहीं गुज़रा। सन् 2000 के कुछ बाद का अर्थ निश्चित रूप से 2050 से पहले है।

शुभ सूचना के साथ एक चेतावनी भी आवश्यक है। बहुत सी आगामी ईश्वरीय व्यवस्थाओं का समय निश्चित होता है और प्रभु की ऐसी योजनाएं भी हेती हैं जो मानव जाति के कर्मानुसार परिवर्तनीय होती हैं। सत्युग की आकांक्षा रखने वालों, युग निर्माण का दावा करने वालों और उसके स्वागत की तैयारी का दम भरने वालों के कर्म पंजीकृत हो रहे हैं कि वे अपने दावे में कितने सच्चे हैं। यदि उन्होंने अपने आप को सिद्ध न किया तो इस अवधि के 40 वर्ष आगे बढ़ा दिये जाने में स्वर्गीय आचार्य के ज्ञान का कोई दोष नहीं होगा।

## मुसलमान स्वयं भी युग निर्माण करें और सहयोग दें:

गायत्री परिवार के सदस्यों का तो मूलाधार ही युग-निर्माण है। वर्तमान मुस्लिम समुदाय अपने निष्कासन की सूचना पर निराश होने के बजाय यदि अपने कुरआनी सिद्धान्तों की सीमाओं में रहते हुए युग परिवर्तन की ईश्वरीय योजना में जुट जाएं तो उन में जो ऐसा करेंगे उनकी गणना अवश्य ही ईश्वर की सूची में उस वर्ग में होगी जो विश्व नरेश पद पर आसीन होगा।

इस समय मुसलमानों का यह कर्तव्य है कि वे समान मूल्यों के आधार पर अपने कुरआनी सिद्धान्तों की सीमाओं में रहते हुए गायत्री परिवार को युग निर्माण योजना के पुनीत कार्य में सहयोग दें। उनके लिये पवित्र क़ुरआन का यह आदेश पर्याप्त है कि —

*"परोपकार और ईश्वर की अवज्ञा से बचने के कामों में प्रत्येक का सहयोग करो और पाप व सीमा-उल्लंघन में किसी को सहयोग न दो ..." (5:2)*

और हर प्रकार की शंका के निवारण के लिये ईशदूत स. का यह आदर्श भी पर्याप्त होना चाहिये कि उन्होंने अपने कुरआन अवतरण से पूर्व काल में कुछ युवकों के साथ 'हिल्फ़ुल-फ़ुजूल' नामक अत्याचार निवारक जिस संस्था का गठन किया था उसके विषय में बाद में भी प्रायः फ़रमाते थे कि यदि आज भी कोई ऐसी संस्था बनाए तो मैं उस में अवश्य शामिल हूंगा। और हुज़ूर स. की यह हदीस भी हमारे लिये मार्गदर्शन है कि —

*"हिक्मत (युक्ति और विवेक) ईमान वाले की अपनी खोई हुई चीज़ है, सो वह उसे जहाँ भी पाए, (यह समझ कर ले ले कि) वह स्वयं उसका अधिकारी है"।*

## दो पुनीतात्माओं का मिलन और आह्वानः

उल्लेखनीय है कि क़ुरआन और हदीस के आधार पर उपरोक्त परिणाम इन शब्दों के लेखक सैयद अब्दुल्लाह तारिक़ के आध्यात्मिक गुरु स्वर्गीय आचार्य मौलाना शम्स नवेद उस्मानी की खोज है। स्व. मौलाना की 1984 में स्व. आचार्य से शान्ति कुञ्ज में दो महत्वपूर्ण मुलाक़ाते हुई थीं। दूसरी एवं अन्तिम भेंट स्वर्गीय आचार्य के अन्तर्ध्यान होने से मात्र 3 महीने पूर्व हुई थी। उस दूसरी व अन्तिम भेंट में स्व. आचार्य ने मौलाना को उनके दैवी कार्यों में समर्थन का आश्वासन भी दिया था। हमें विश्वास है कि यह दोनों महानुभाव अपने द्यावा-स्तर पर साथ मिल कर युग परिवर्तन के कार्य में लगे हैं और अपने शिष्यों के प्रयासों को निहार भी रहे हैं। कहीं उनके शिष्य उन्हें निराश तो नहीं करेंगे?

गायत्री परिवार से सहयोग हेतु कृपया 18 सूत्रीय कार्यक्रम 'बराए तामीरे ज़माना हमारा अज़मे मुसम्मम' के समान आधारों का संकल्प लें जो इस पुस्तिका के पीछे कवर पर प्रकाशित किया जा रहा है।

## बराय तामीरे जमाना हमारा अज़्मे मुसम्मम

१. हम परवरदिगार को हाज़िरो नाज़िर मानकर, ज़िन्दगी के हर शोबे में उस के नज़्मो नस्क़ को अमल में लायेंगे।

२. जिस्म को अपने माबूद की इबादत गाह समझकर, खुद ज़ब्दी के साथ हमेशा तन्दरुसती की हिफाज़त करेंगे।

३. अपने दिलो दिमाग़ को बदख़्याली और बदख़ाही से मुबर्रा रखने के लिए, नेक सोहबत और मुताल्य की मश्क़ में मसरुफ रहेंगे।

४. ज़बते हवास, ज़बते ज़र, ज़बते वक़्त, और ज़बते ख़यालात की मुसलसल मश्क़ करते रहेंगे।

५. अपने आपको समाज का एक नाक़ाबिले तक़सीम हिस्सा मानेंगे और सब की बहबूदी को ही अपनी बहबूदी तसलीम करेंगे।

६. मरयादाओं पर गामज़न रहेंगे, ममनुआत से परहेज़ करेंगे, क़ौमी फ़रायज को सरंजाम देंगे और समाज की बेहतरी के लिए कोशां रहेंगे।

७. समझदारी, ईमानदारी, ज़िम्मेदारी, और बहादुरी को ज़िन्दगी में अव्वलतरीन दरजा देंगे।

८. चारों तरफ शीरीं, साफ शफ्फाफ-बे तकल्लुफ और शरीफाना माहौल पैदा करेंगे।

९. बद दयानती से हासिल करदा कामयाबी की निसबत, दयानतदारी पर अमल करते हुए, नाकामी का खैर मक़सद करेंगे।

१०. इंसान के मयार की कसौटी उसकी कामयाबियों, क़ाबलियतों और अज़मतों को नहीं बल्कि उसके नेक ख़यालात और नेक कामों को मानेंगे।

११. दूसरों के साथ वो सुलूक़ नहीं करेंगे जो हमें अपने लिए पसंद नहीं।

१२. सभी मरदोज़न एक दूसरे को पाकीज़ा निगाहों से देखेंगे।

१३. संसार में नेक इरादियत और नेकोकारी की तशहीर के लिए अपने क़ीमती वक़्त, असरो रसूख़, इल्मोफन, महनतोमुशक्क़ और मालोज़र का हिस्सा, बिला नाग़ा लगाते रहेंगे।

१४. रवायात के मुकाबले में दानिशमंदी को तरजीह देंगे।

१५. नेक इनसानों को मुतहिद करने, बदअमली की मुखालफत करने और तख़्लीक़ी कामों को सरंजाम देने में तहदिल से शिरकत करेंगे।

१६. कौमी यकजहती और यकसानियत के लिए दिलोजान से कोशिश करते रहेंगे। ज़ातपात, नरोमादा, जुबान, इलाक़ाई और फिरकेवाराना रुजहानात की बिना पर कोई इमतियाज़ रवा नहीं रखेंगे।

१७. इंसान अपनी किसमत का मैमार ख़ुद आप है। इस माकूले पर अमल करते हुए हम बेहतरीन बनेंगे और दूसरों को भी बेहतर बनायेंगे तो युग हर हालत में बदलेगा या ज़माने में इनकलाब ज़रूर आएगा।

१८. 'हम बदलेंगे, युग बदलेगा' 'हम सुधरेंगे, युग सुधरेगा' इस सदाक़त पर हमारा पुख़ता यक़ीन है।

# برائے تعمیر زمانہ ہمارا عزم مصمم

1۔ہم پروردگار کو حاضر ناظر مان کر زندگی کے ہر شعبے میں اس کے نظم ونسق کو عمل میں لائینگے۔

2۔جسم کو اپنے معبود کی عبادت گاہ سمجھ پر خود ضبطی کے ساتھ ہمیشہ تندرستی کی حفاظت کرینگے۔

3۔اپنے دل ودماغ کو بدخیالی اور بدخواہی سے بچانے کیلئے نیک صحبت مطالعہ کی مشق میں مصروف رہینگے۔

4۔ضبط حواس، ضبط زر۔ضبط وقت اور ضبط خیالات کی مسلسل مشق کرتے رہینگے۔

5۔اپنے آپ کو سماج کا ایک ناقابل تقسیم حصہ مانینگے اور سب کی بہبودی کو ہی اپنی بہبودی تسلیم کرینگے۔

6۔مریاداؤں پر گامزن رہیں گے۔ممنوعاتسے پرہیز کرینگے۔قومی فرائض کو سرانجام دینگے اور سماج کی بہتری کے لئے کوشاں رہینگے۔

7۔سمجھداری۔ایمانداری۔ذمہ داری اور بہادری کو زندگی میں اوّل ترین درجہ دینگے۔

8۔چاروں طرف شیرین۔صاف شفاف۔بے تکلف اور شریفانہ ماحول پیدا کرینگے۔

9۔بدیانتی سے حاصل کردہ کامیابی کی نسبت دیانت داری پر عمل کرتے ہوئے ناکامی کا خیر مقدم کرینگے۔

10۔انسان کے معیار کی کسوٹی کی کامیابیوں۔قابلیتوں اور عظمتوں کو نہیں بلکہ اُس کے نیک خیالات اور نیک کاموں کو مانیں گے۔

11۔دوسروں کے ساتھ وہ سلوک نہیں کرینگے جو ہمیں اپنے لئے پسند نہیں۔

12۔سبھی مرد وزن ایک دوسرے کو پاکیزہ نگاہوں سے دیکھیں گے۔

13۔سنسار میں نیک ارادیت اور نیکوکاری کی تشہیر کیلئے اپنے قیمتی وقت اثر ورسوخ۔علم وفن۔محنت ومشقت اور مال وزر کا ایک حصہ بلاناغہ لگاتے رہیں گے۔

14۔روایات کے مقابلے میں دانش مندی کو ترجیح دینگے۔

15۔نیک انسانوں کو متحد کرنے۔بدعملی کی مخالفت کرنے اور تخلیقی کاموں کو سرانجام دینے میں تہہ دل سے شرکت کریں گے۔

16۔قومی یک جہتی اور یکسانیت کیلئے دل وجان سے کوشش کرتے رہیں گے۔ذات پات۔نرومادہ۔زبان۔علاقائی اور فرقے وارانہ رجھانات کی بناپر کوئی امتیاز روا نہیں رکھیں گے۔

17۔انسان اپنی قسمت کا معمار خود آپ ہے۔اس معقولے پر عمل کرتے ہوئے ہم بہترین بنیں گے۔اور دوسروں کو بھی بہترین بنائیں گے۔تو یگ ہر حالت میں بدلے گا۔

18۔"ہم بدلیں گے۔یگ بدلے گا"۔ہم سدھریں گے۔یگ سدھرے گا۔"اس صداقت پر ہمارا پختہ یقین ہے۔

Contact. Mob.- 9358119918
Shantikunj, HARIDWAR
www.awgp.org